Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of History
H. D. Jain College, Ara.

(1)

Notes for - B.A. Part - III, Paper - V

Topic - मुगल साम्राज्य की विशेषताएँ :- "शैक्षणिक एवं साहित्य प्रगति"

मुगल साम्राज्य में शाहजहाँ का शासनकाल शिक्षा एवं साहित्य के विकास का भी काल था। शिक्षा के समुचित प्रसार के लिए उसने अनेक विद्यालयों की स्थापना करवाई, जिसमें प्रमुख हैं - आगरा और दिल्ली के विद्यालय। मस्जिदों में भी शिक्षा के प्रसार का कार्य किया गया। शैक्षणिक संस्थाओं को राजकीय अनुदान प्रदान किये जाते थे। इस्लामी शिक्षा के अतिरिक्त भारतीय शिक्षा को भी प्रोत्साहन दिया गया।

शाहजहाँ के समय में भारतीय शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थाओं को भी बिना किसी भेदभाव के अनुदान दिए गए। फलस्वरूप इस समय फारसी भाषा और साहित्य के अतिरिक्त हिन्दी एवं संस्कृत साहित्य का भी समुचित विकास हुआ। डॉ० बी० पी० सक्सेना के अनुसार, शाहजहाँ का शासनकाल हिन्दी साहित्य एवं भाषा के विकास का सबसे अधिक शानदार काल था।

शाहजहाँ के दरबार में फारसी, हिन्दी, संस्कृत एवं उर्दू भाषा के अनेक विद्वान एवं कवि विद्यमान थे। इस समय फारसी भाषा में कविताएँ एवं ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखे गए। अब्दुल हमीद लाहौरी ने अपना प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थ बादशाहनामा एवं खफी ने मुन्तखाब-उल-लुबाब की रचना इसी समय की।

→

→ शाहजहाँ का पुत्र, दारा शिकोह फारसी का अच्छा विद्वान था। उसने संस्कृत के अनेक ग्रंथों (अथर्ववेद, उपनिषद) का फारसी भाषा में अनुवाद किया। मुंशी बनवारी दास ने प्रबोध चन्द्रोदय का फारसी अनुवाद किया। रामायण का भी फारसी अनुवाद हुआ। ज्योतिष, गणित की पुस्तकों का भी संस्कृत से फारसी में अनुवाद हुआ।

शाहजहाँ हिन्दी के विकास में भी अभिरुचि रखता था। उसने हिन्दी के प्रमुख कवियों एवं विद्वानों को राज्याश्रय भी दिया। उसके समय के प्रसिद्ध हिन्दी कवियों में प्रमुख थे - सुरदास चिंतामणि और कविंद्र आचार्य।

सूरदास ने सुन्दर श्रृंगार, सिंहासन बत्तीसी और बारहमासा की रचना की। संस्कृत के सबसे बड़े विद्वान और शाहजहाँ के राजकवि जगन्नाथ पंडित थे। उन्होंने गंगालहरी की रचना की। शाहजहाँ उनसे अधिक प्रभावित था और उन्हें उसने 'महाकवि राय' की उपाधि से विभूषित किया।

शाहजहाँ का शासन काल मुगलकालीन भारतीय इतिहास में सामान्यतः स्वर्ण युग ~~का~~ के नाम से विख्यात है। अनेक तत्कालिन इतिहासकारों, विदेशी यात्रियों तथा आधुनिक इतिहासज्ञों का मानना है कि शाहजहाँ के समय में मुगल साम्राज्य की चतुर्दिक प्रगति हुई। साम्राज्य में शांति एवं सुव्यवस्था बनी रही, विद्रोह नहीं के बराबर हुए, आर्थिक प्रगति हुई एवं कला-कौशल, शिक्षा एवं साहित्य का चरमोत्कर्ष हुआ। दरबार की शान-शौकत पराकाष्ठा पर पहुँच गई।

—